CHAPTER 19

यथास्मै रोचते विश्वं

PAGE 145, प्रश्न और अभ्यास

12:1:19:प्रश्न और अभ्यास :1

लेखक ने कवि की तुलना प्रजापति से क्यों की है?

उत्तर- लेखक तथा प्रजापति की तुलना इस लिए की जाती है क्योंकि लेखक तथा कवी दोनों में संसार को बदलने की क्षमता होती है। जैसे प्रजापति संसार को कभी बदल सकते है उसी प्रकार कवि भी अपनी रचनाओं से संसार को बदलने की शक्ति रखता है।

12:1:19:प्रश्न और अभ्यास :2

'साहित्य समाज का दर्पण है' इस प्रचलित धारणा के विरोध में लेखक ने क्या तर्क दिए हैं?

उत्तर- 'साहित्य समाज का दर्पण है' इस प्रचलित धारणा के विरोध में ये तर्क दिए हैं :-

(**क**) अगर साहित्य में ताकत होती, तो दुनिया को बदलने का विचार पैदा नहीं होता।

(**ख**) त्रासदी दिखाते समय, आदमी को वास्तविक त्रासदी से अधिक कुछ के रूप में दिखाया जाता है। यह वही है जो विरोधभास दिखती है।

(**ग**) कवि अपनी रुचि के अनुसार दुनिया को बदलता रहता है। इसलिए, ऐसा साहित्य समाज का दर्पण नहीं हो सकता। जहां कवि की रुचि चलती है। संसार किसी का हित नहीं है।

(**घ**) जब कोई समाज के व्यवहार से असंतुष्ट होता है, तो वह दुनिया को बदल देता है या एक नई दुनिया की कल्पना करता है। तो इस भावना के साथ किया गया साहित्य समाज का दर्पण कैसे हो सकता है।

12:1:19:प्रश्न और अभ्यास :3

दुर्लभ गुणों को एक ही पात्र में दिखाने के पीछे कवि का क्या उद्देश्य है? उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- दुर्लभ गुणों को एक ही मनुष्य में दिखने का कवि का उद्देश्य दिष्विहीन युवक को दिशा दिखाना होता है। क्योंकि ऐसे व्यक्ति का समाज में असंभव है जिसके अंदर सभी दुर्लभ गुण हो। परन्तु लेखक अपने सुविधा अनुसार ऐसे पटरी का निर्माण कर सकते है।

12:1:19:प्रश्न और अभ्यास :4

"साहित्य थके हुए मनुष्य के लिए विश्रांति ही नहीं है। वह उसे आगे बढ़ने के लिए उत्साहित भी करता है।" स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- इस बात का आशय यह है कि साहित्य एक थके हुए मनुष्य को सिर्फ विश्राम ही नहीं प्रदान करता है अपितु उसे फिरसे चलने के लिए उत्साहित भी करता है। साहित्य मनुष्य को नयी दिशा प्रदान करता है। उसके मनोबल को बढाकर उसे निरंतर आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करता है। **।**

12:1:19:प्रश्न और अभ्यास :5

"मानव संबंधों से परे साहित्य नहीं है।" इस कथन की समीक्षा कीजिए।

उत्तर- किसी भी साहित्य का लेखक एक मानव ही होता है। लेखक के अंदर मानव के गुण विद्यमान रहते है। जिनका असर उसके साहित्य में दिखता है। लेखक के अपने सम्बन्धियों के साथ सम्बन्ध उसके साहित्य में प्रदर्शित होते है। दुखी तथा प्रसन्नता होने पर ही लेखक अपने सम्बन्धो के बारे में साहित्य लिखता है। इसीलिए लेखक कहते है की "मानव सम्बन्धो से परे साहित्य नहीं है। "**।**

12:1:19:प्रश्न और अभ्यास :6

'पंद्रहवीं-सोलहवीं' सदी में हिंदी-साहित्य ने कौन-सी सामाजिक भूमिका निभाई?

उत्तर- पंद्रहवी सोलहवीं शतब्दियों के समय को हिंदी साहित्य का स्वर्णिम युग कहा जाता है। इस युग में उच्चकोटि का साहित्य देखने को मिलता है। इस युग में कवि सिर्फ भक्ति के कारन नहीं लिखते थे। बल्कि वे बाहरी आक्रांताओं के कारण समाज में उत्पन्न आडम्बरो और भेदभावों के कारण उत्पन्न हुए थे। उस समय की रचनाओं ने समाज को सुख

प्रदान किया तथा समाज में व्याप्त कुसंगतियों हटाने का भी प्रयास किया। इस युग में कबीर ,तुलसी,सूरदास ,मीरा ,रसखान ,नानक ,घनानंद ,नंददास ,रहीम ,नरोत्तमदास इत्यादि बहुत से कवि हुए हैं।

12:1:19:प्रश्न और अभ्यास :7

साहित्य के 'पांचजन्य' से लेखक का क्या तात्पर्य है? 'साहित्य का पांचजन्य' मनुष्य को क्या प्रेरणा देता है?

उत्तर- 'पाञ्चजन्य एक शंख है जो समुद्र मंथन में निकला था तथा विष्णु जी के हाथो में विराजमान है। इसकी विशेषता यह थी कि इसे इस जगह पर फुकने पर पांच स्थानों से ध्वनि निकलती थी। लेखक ने साहित्य की तुलना 'पाञ्चजन्य शंख से की है। वे कहते है की साहित्य मनुष्य को जीवन रुपी युद्धभूमि में लड़ने के लिए प्रेरित करता है।

PAGE 146

12:1:19:प्रश्न और अभ्यास :8

साहित्यकार के लिए स्रष्टा और द्रष्टा होना अत्यंत अनिवार्य है, क्यों और कैसे?

उत्तर- साहित्यकार के लिए आवश्यक यह है कि उसके अंदर स्रष्टा और द्रष्टा दोनों का गुण विद्यमान हो। नयी रचनाओं के लिए उसे स्रष्टा की आवश्यकता होती है तथा द्रष्टा समाज में व्याप्त समस्यायों को सूक्ष्मता से देखने की क्षमता रखता है। समाज की समस्याओं पर लेखक नया साहित्य रचता है तथा समस्याओं की जड़ो पर प्रहार करता है।

12:1:19:प्रश्न और अभ्यास :9

कवि-पुरोहित के रूप में साहित्यकार की भूमिका स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- पुरोहित आम जनता को आगे बढ़ने तथा पूजा के लिए निर्देश देता है। इसी प्रकार कवी अपने साहित्य से आम लोंगो का मार्गदर्शन करता है। कवी और पुरोहित अगर यदि जनता को निर्देश देने में सक्षम नहीं है तो उनका जीवन व्यर्थ है। कवी अपनी रचनाओं से जनता को प्रतोसहित करता है। इस तरह कवी पुरोहित के रूप में जनता का मार्गदर्शन करता है।

12:1:19:प्रश्न और अभ्यास :10

सप्रसंग सहित व्याख्या कीजिएः

(क) 'कवि की यह सृष्टि निराधार नहीं होती। हम उसमें अपनी ज्यों-की-त्यों आकृति भले ही न देखें, पर ऐसी आकृति ज़रूर देखते हैं जैसी हमें प्रिय है, जैसी आकृति हम बनाना चाहते हैं।'

(ख) 'प्रजापति-कवि गंभीर यथार्थवादी होता है, ऐसा यथार्थवादी जिसके पाँव वर्तमान की धरती पर हैं और आँखें भविष्य के क्षितिज पर लगी हुई हैं।'

(ग) 'इसके सामने निरुद्देश्य कला, विकृति काम-वासनाएँ, अहंकार और व्यक्तिवाद, निराशा और पराजय के 'सिद्धांत' वैसे ही नहीं ठहरते जैसे सूर्य के सामने अंधकार।'

उत्तर-

(क) **<u>प्रसंग</u>** - प्रस्तुत पंक्तियाँ रामविलास शर्मा द्वारा लिखित निबंध 'यशास्मै रोचते विश्वं 'से ली गयी है ।प्रस्तुत पंक्ति में कवि सृष्टि के विषय में अपने विचार व्यक्त करता है ।

<u>व्याख्या</u> : कवि द्वारा रचित सृष्टि सिर्फ कल्पना नहीं होती है। कवी वही लिखता है जो देखता तथा समझता है। उसके पात्र पूरी तरह भले ही हमे अपने आसपास दिखयी नहीं दे। परन्तु हमे उन पत्रों में ऐसे गुण मिल जायेंगे जो हमे सुख प्रदान करते है। ऐसे पात्र जो हमे प्रिय है। ऐसी सृष्टि की परछाई कवि के रचनाओं में दिखती है जिसकी हम कल्पना करते है।

भाव यह है कि यह एक ऐसी रचना है जिसे पाठक ऐसा महसूस करता है मानो यह ऐसे लिखा गया हो जैसे कि यह उसके जीवन के उद्देश्य से लिखा गया हो। वह उनकी समस्याओं की एक प्रति है और उसमें व्याप्त समाधान उनके जीवन में व्याप्त समस्याओं का समाधान दे रहे हैं।

(ख) <u>प्रसंग</u> - प्रस्तुत पंक्तियाँ रामविलास शर्मा द्वारा लिखित निबंध 'यशास्मै रोचते विश्वं 'से ली गयी है । प्रस्तुत पंक्ति में कवि के गुणों के विषय में बताया गया है ।

<u>व्याख्या</u> : लेखक कहते है की सृष्टि की रचना करने वाले कवि गंभीर यथावादी होते है। इस प्रकार के साहित्यकार की विशेषता यह होती है की वे सत्य को यथावस्था लिखते है। वे वर्तमान पर पैर जमाये भविष्य

की रचनाये करते है। उनकी रचनाये सत्य से परे नहीं होती है।

(ग) प्रसंग: प्रस्तुत पंक्तियाँ रामविलास शर्मा द्वारा लिखित निबंध 'यशास्मै रोचते विश्वं 'से ली गयी है । प्रस्तुत पंक्ति में कवि साहित्य के विषय में अपने विचार व्यक्त करता है ।

<u>व्याख्या</u> : लेखक साहित्य की विशेषताओं का वर्णन करते हुए कहते है की साहित्य सिर्फ मनोरंजन का साधन नहीं है। यह सदैव मनुष्य को आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करता है। हमारी साहित्य का गौरवशाली इतिहास इस बात का प्रमाण है। हमारे साहित्य में काम वैष्णो , व्यक्ति विशेष को अधिक महत्व , तथा अहंकार इत्यादि के लिए कोई स्थान नहीं हैं। बल्कि साहित्य के अध्ययन से मनुष्य के अंदर से ये सब ऐसे दूर हो जाते है जैसे सूर्य की रौशनी से अँधेरा।

भाषा शिल्प

12:1:19:प्रश्न और अभ्यास - भाषा शिल्प :1

पाठ में प्रतिबिंब-प्रतिबिंबित जैसे शब्दों पर ध्यान दीजिए। इस तरह के दस शब्दों की सूची बनाइए।

उत्तर-

संगठन- संगठित

असल - असलियत

पठ- पठित

चित्र - चित्रित

चल- चलित

लिख - लिखित

आमंत्रण - आमंत्रित

दंड- दण्डित

12:1:19:प्रश्न और अभ्यास - भाषा शिल्प :2

पाठ में 'साहित्य के स्वरूप' पर आए वाक्यों को छाँटकर लिखिए।

उत्तर- पाठ में 'साहित्य के स्वरुप 'पर आये वाक्य इस प्रकार है :

(क) साहित्य समाज का दर्पण होता है तो संसार को बदलने की बात न उठती ।

(ख) साहित्य थके हुए मनुष्य के लिए विश्रांति ही नहीं, वह उसे आगे बढ़ने के लिए उत्साहित भी करता है ।

(ग) साहित्य का पाञ्चजन्य समरभूमि में उदासीनता का राग नहीं सुना ।

(घ) साहित्य मानव संबंधो से परे नहीं है ।

12:1:19:प्रश्न और अभ्यास - भाषा शिल्प :3

इन पंक्तियों का अर्थ स्पष्ट कीजिएः

(क) कवि की सृष्टि निराधार नहीं होती ।

(ख) कवि गंभीर यथार्थवादी होता है।

(ग) धिक्कार है उन्हें जो तीलियाँ तोड़ने के बदले उन्हें मजबूत कर रहे हैं।

उत्तर-

(क) कवि द्वारा रचित सृष्टि सिर्फ कल्पना नहीं होती है। कवी वही लिखता है जो देखता तथा समझता है। उसके पात्र पूरी तरह भले ही हमे अपने आसपास दिखयी नहीं दे। परन्तु हमे उन पत्रों में ऐसे गुण मिल जायेंगे जो हमे

सुख प्रदान करते है। ऐसे पात्र जो हमे प्रिय है। ऐसी सृष्टि की परछाई कवि के रचनाओं में दिखती है जिसकी हम कल्पना करते है। ।

(ख) लेखक कहते है की सृष्टि की रचना करने वाले कवि गंभीर यथावादी होते है। इस प्रकार के साहित्यकार की विशेषता यह होती है की वे सत्य को यथावस्था लिखते है। वे वर्तमान पर पैर जमाये भविष्य की रचनाये करते है। उनकी रचनाये सत्य से परे नहीं होती है।

(**ग**) लेखक कहते है की ऐसे साहित्यकार जिनका साहित्य लोंगो को ग़ुलाम बना देता है उन पर धिक्कार है। ऐसे साहित्यकारों को डूबकर मर जाना चाहिए। साहित्यकार को ऐसे साहित्य की रचना करनी चाहिए प्रेरणा प्रदान करे।